तृतीय अध्याय

प्रेमचंद और उनके समकालीन उपन्यासों में नारी

3.1. भूमिका :

नारी प्राणदात्री है। नारी की प्रेरणा पुरुष को महान कलाकार, महान कवि, महान योगी बना सकती हैं। वह समाज में सरसता का संचार कर सर्जन कार्य को सुचारु रूप से संचालित करती है। पुत्री बनकर वह कुल की कीर्ति ही नहीं बढ़ाती अपितु दो कुलों की गौरवान्वित करती है। अपनी सहज सरसता के कारण वह दो अपरिचितों में घनिष्ठ सम्बन्ध स्थापित करा देती है। वह जब बहन रूप में भाई के सम्मुख आकर राखी बाँधती है, तिलक लगाती है तो हृदय में एक नवीन उल्लास प्रेरणा और उत्साह का संचार कर देती है। जब वह नर के सम्मुख नारी रूप में आती है। तो वह नर के आधे रूप को पूर्ण करने के लिए अर्धांगिनी के वेष में अवतरित होती है। मनुष्य नारी को प्राप्त करने के लिए अपने प्राणों का मोह त्याग कर अत्यधिक कठोर और भयंकर से भयंकर कार्य करने के लिए तैयार हो जाता है।

मुंशी प्रेमचंद हिंदी उपन्यास जगत के एक अमर कथाकार हैं तथा उनके कथा साहित्य में नारी के विभिन्न रूपों का दर्शन मिलते हैं। कन्या, पत्नी, प्रेमिका, माँ, विधवा, वेश्या आदि नारी के विविध रूप देखने को मिलता है उनके रचित साहित्य में।

3.2 प्रेमचंद के साहित्य में नारी पात्र :

प्रेमचंद के नारी-पात्र भारतीय जीवन के वास्तविक स्वरूप को प्रदर्शित करने वाले पात्र हैं। कल्पना की पालिश उनपर है तो लेकिन बहुत कम। उन पात्रों की अपनी मान्यतायें हैं, अपने आदर्श हैं, अपने विचार हैं और अपने दृष्टिकोण हैं। उनके जीवन की समस्त आशा-निराशायें सुख-दुख जैसे हमारी आँखों के समग्र मूर्तिमन्त हो उठते हैं। प्रेमचंद के नारी पात्रों का एक क्रमिक विकास है जो बृजरानी से शुरु होकर नोहरी और धनिया के रूप में आगे बढ़ता है। इस क्रम में कई प्रकार के पात्र हमारे सामने आते हैं जो कि भिन्न-भिन्न वर्गों का प्रतिनिधित्व करते हैं। कुछ मध्यवित्त, कुछ किसान, कुछ महाजन और कुछ जमींदार वर्ग की सदस्ययें हैं और वे अपने ही वर्ग की धारणा, चरित्र और नैतिकता को व्यक्त-करती है। प्रेमचंद अपने नारी पात्रों द्वारा प्राय: सभी युगों का प्रतिनिधित्व करते हैं; भूत, वर्तमान सभी काल प्रेमचंद के उपन्यासों में मूर्त्त हो उठे हैं। एक ओर उनके उपन्यासों में विरजन जैसी सती साध्वी नारियाँ हैं, जिनके जीवन का ध्येय ही एकान्त साधना है, तो दूसरी ओर सुखदा और मुन्नी जैसी नारियाँ सार्वजानिक त्रेत्र को ही अपने जीवन का चरम लक्ष्य समझकर जीवन के मैदान में

आ जाती है। एक ओर सामाजिक विषमता से पीड़ित सुमन का विवश व्यक्तित्व है तो दूसरी ओर धनिया जैसा कर्मठ नारी-पात्र जिसके स्वरों में युग-युग की पीड़ा का कारुण्य भी है और विद्रोह की प्रबलता का काठिन्य भी। प्रेमचंद के प्रत्येक पात्र का अपना व्यक्तिगत इतिहास है और समस्त पात्रों के पीछे एक सम्मिलित सामाजिक दर्शन। उपन्यासकार को चाहिये कि वह अपने पात्रों को जीवन की संघर्षमयी रंगस्थली में सुख-दुख से आँख-मिचौनी खेलने के लिए छोड़ दे। उत्थान-पतन, घात-प्रतिघातों की झेलता हुआ पात्र स्वयम् ही अपने जीवन को अनावृत करे। आधुनिक चरित्र-नायकों के समग्र खलनायकों का विरोध नहीं होता, विरोधी परिस्थितियाँ ही उनकै सामने बाधा बनकर आती हैं। प्रेमचंद के नारी पात्रों की सबसे बड़ी विशेषता यही है कि वे लेखक द्वारा प्रशासित नहीं हैं, वे स्वतन्त्र गति से अबाध आगे बढ़ते हैं। विभिन्न प्रकार की परिस्थितियाँ उनके जीवन में बाधायें डालती हैं किन्तु वे बिना उनकी चिन्ता किये बढ़ते ही रहते हैं सतत अविराम।[1]

3.3. प्रेमचंद के नारी पात्रों का वर्गीकरण :

सुविधा के दृष्टि से प्रेमचंद के स्त्री-पात्रों को तीन श्रेणियों में विभाजित किया जा सकता है :-

(1) बाबू-वर्ग

(2) किसान-वर्ग

(3) जमींदार-वर्ग

बाबू-वर्ग के पात्राएँ : वृजरानी (वरदान); पूर्णा, सुमित्रा, प्रेमा (प्रतिज्ञा); सुमन, शान्ता (सेवासदन); निर्मला, सुधा (निर्मला); जालपा (गबन)।

किसान-वर्ग की पात्राएँ :- विलासी (प्रेमाश्रम) धनिया, सिलिया, मुनिया, नोहरी, सोना (गोदान); सलोनी, मुन्नी (कर्मभूमि)।

जमींदार-वर्ग की-पात्राएँ :- विद्या, गायत्री (प्रेमाश्रम); मनोरमा (कायाकल्प)।

किसान-वर्ग को हम निम्न-मध्यम वर्ग भी कह सकते है। निम्न-मध्यम-वर्ग में कायाकल्प की लोगों की भी गणना हो सकती है।

यह वर्गीकरण श्री प्रयागराज मेहता का है जो ठीक लगता हैं। इन तीनों श्रेणियों के सामाजिक धरातल में वर्तमान आर्थिक सामन्ती व्यवस्था की एक समानता हैं। चाहे बाबू-वर्ग की सुमन या निर्मला हो, चाहे जमींदारिन गायत्री हो, चाहे किसान स्त्री विलासी या सिलिया हो, सभी पात्र सामन्ती वातावरण में साँस लेते हैं। इन पात्रों की मानसिक क्रियाओं, इनकी चेतना तथा आदतों पर इस व्यवस्था का असर भी पड़ता आवश्यक है और वह असर प्रेमचंद के स्त्री-पात्रों से स्पष्ट है।[2]

3.4. प्रेमचंद के नारी-पात्रों की चरित्रगत विशेषतायें :

संक्षेप में प्रेमचंद के उपन्यासों में नारी-पात्रों की चरित्रगत विशेषताओं को निम्न प्रकार से देखा जा सकता है:-

(1) पात्रों का मनोवैज्ञानिक चित्रण प्रेमचंद की नारियों की प्रमुख विशेषता हैं। प्रेमचंद का मनोविज्ञान जीवन के यथार्थ से निकलता है। उन्होंने फ्रायड के मनोविश्लेषणात्मक फार्मूलों को यन्तवत अपने पात्रों में नहीं उतारा यही उनकी महानता है।

(2) नारी-जीवन की विविध समस्याओं का शक्तिशाली स्वरूप उनके उपन्यासों में प्रकट हुआ है। विधवा-विवाह, अनमेल-विवाह, वृद्ध-विवाह, वेश्या-समस्या व बहुविवाह उनकें उपन्यासों की प्रमुख समस्यायें रही हैं।

(3) प्रेमचंद की नारियाँ काल्पनिक कम, वास्तविक अधिक हैं। वे सामाजिक यथार्थ हैं।

(4) उनकी नारियों में संघर्ष एवं देशभक्ति की स्वस्थ भावनाओं का सम्यक निर्वाह हुआ है।

(5) प्रेमचंद की नारियों की सबसे बड़ी विशेषता उनकी भारतीयता है। उनका जीवन परिवार, समाज एवं राष्ट्र तीनों का अपूर्व संगमस्तल है। तीनों के प्रति ही उनकी निष्ठा जीवन भर अपने कर्त्तव्य से विमुख नहीं होती।

(6) प्रेमचंद की प्राय: सभी नारियॉ पतिपरायणा हैं। चाहे किसान-वर्ग की धनिया हो या मध्यम-बाइ-वर्ग की सुमित्रा, या फिर जमीदार-वर्ग की विघा। सबके अपने पति से प्रेम है, किन्तु पति के अत्याचारों को सहने के लिये कोई भी तत्पर नहीं।

3.5. प्रेमचंद के समकालीन उपन्यासों में नारी :

प्रेमचंद के समकालीन उपन्यासकार है क्रमश: जयशंकर प्रसाद, विश्वम्भरनाथ शर्मा 'कौशिक', हृदयेश, भगवती प्रसाद वाजपेयी, राजा राधिकारमण प्रसाद सिंह, प्रतापनारायण श्रीवास्तव, सूर्यकांत त्रिपाठी 'निराला' आदि। उनलोगों ने भी अपने औपन्यासिक रचनाओं में नारी जीवन की चित्र खींचा हैं। प्रेमचंद के समकालीन उपन्यासकारों में 'प्रसाद' का नाम सबसे पहले आता है। उनका 'कंकाल' हिंदी के उपन्यास-साहित्य में एक नया मोड़ उपस्थित करता है। कंकाल ने आदशौन्मुख यथार्थवाद की वेगवती धारा की दो धाराओं में परिवर्तित कर दिया, आदर्शोन्मुख यथार्थवाद और प्रकृतवादी विचार-धारा। कंकाल में स्त्री-पुरुष के अवैध सम्बधों पर भी प्रसाद ने प्रकाश डाला है जिनसे समाज

का खोखलापन प्रदर्शित होता है। प्रसाद जी का विचार था कि स्त्रियों की समस्या के हल में ही समाज की भलाई है। यही भावना उनकी नारी सृष्टि के मूल में विद्यमान है।

कौशिक जी प्रेमचंद जी की परम्परा के ही उपन्यासकार थे। कौशिक जी के उपन्यासों की सबसे बड़ी विशेषता है कि उन्होंने थोड़े पात्रा और थोड़ी समस्याओं को लेकर उनकी गहराई में पहुँचने की चेष्ठा की हैं। उन्होंने जिस पात्र को लिया हैं उसके विविध पहलुओं पर प्रकाश डाला है और उसके अन्तर्द्वन्द्वों का भी स्पष्टीकरण और समाधान करने का प्रयत्न किया है।

हृदयेश ने भी अपने उपन्यासों में नारी की मन-स्थिति पर सम्यक् प्रकाश डाला है। नारी पर विश्वास किया जाए तो वह प्रेम की देवी बन सकती है, उसका चरित्र दृढ़ हो सकता है, किन्तु नारी के प्रति अविश्वास नारी को दुर्बल बनाकर उसे निम्न पथाभिमुखी बना देता है।

भगवतीप्रसाद वाजपेयी के प्राय: सभी उपन्यास नारी-जीवन से सम्बंधित हैं। 'प्रेम-पथ' में वासना और कर्त्तव्य का बड़ा सुंदर संघर्ष पदर्शित किया है। वाजपेयी जी की नारियाँ जीवन की प्रतिकूल परिस्थितियों से टक्कर लेने में सदा असफल रहती हैं। क्योंकि मानसिक विलास की शिथिलता उन्हें संघर्ष नहीं करने देती। वे पुरुषार्थ को नहीं, नियति को आत्म-समर्पण करती हैं। वे नियति के हाथों का खिलौना बनकर इधर-उधर लुढ़कती फिरती हैं। फिर भी उन्होंने नारी-हृदय को लेकर उसके रहस्योद्घाटन का सफल प्रयास किया है।

राजा साहब ने अपने उपन्यास द्वारा नारी के प्रेम की शालीनता को व्यक्त करने का प्रयास किया है। नारी प्यार करती है, किन्तु उसका प्यार लौकिक भाव-भूमि पर आधारित नहीं होता। पुरुष प्यार करता है उसका प्यार नारी देह को लोलुप दृष्टि से देखने लगता है। नारी का प्रेम निर्विकार होता है, गाँधी के वीच जलते हुए दीप के समान निष्काम। पुरुष का प्रेम सकाम है, चंचल है, हृदय के उदाम वेगों को प्रकट करने वाला एक भाव विशेष है और कुछ नहीं। (पुरुष और नारी)

प्रतापनारायण श्रीवास्तव ने अपने प्रसिद्ध उपन्यास 'विदा' में नारी के विभिन्न रुपों पर प्रकाश डाला है। दूसरी ओर सूर्यकांत त्रिपाठी 'निराला' प्रेमचंद के अंतिम दिनों के उपन्यासकार है इनका प्रथम उपन्यास 'अप्सरा' साहित्य में प्रसिद्धि न पा सका, किन्तु दुसरा उपन्यास 'अलका' अच्छा वन पड़ा हैं। उनकी 'अलका' की अलका एक उच्च नारी-चरित्र है। जीवन के संघर्षों को झेलते हुए वह अपने जीवन में सफलता का ही अन्त में वरण करती है और अपने खोए पति को प्राप्त करती है।

प्रेमचंद की परम्परा के अन्य उपन्यासकार है क्रमश: ठाकुर श्रीनाथ सिंह, सियारामशरण गुप्त, वृन्दावनलाल वर्मा, आदि। उनलोगों ने भी नारी विषयक दृष्टिकोण पर प्रकाश डाला हैं।

3.6. निष्कर्ष :

निष्कर्षत : हम ये कह सकते हैं कि प्रेमचंद ने नारी-चित्रण में अपने पूर्ववर्ती उपन्यासकारों से भिन्न एक नये मार्ग का अवलम्बन इनके पहले नारी-जीवन का इतना विशद चित्रांकन हिंदी उपन्यासों में नहीं हुआ था। नारी के विभिन्न रूप प्रेमचंद की लेखनी के संस्पर्श से पहली बार हिंदी उपन्यासों का विषय वने। प्रेमचंद की रचनाए पुरुष-प्रधान समाज के लिये उनके अत्याचारों पर करारी चोटें थी और नारी के लिये उन्मुक्ति का मोहक द्वार।

3.7. संदर्भ :

1. डॉ० शैल रस्तोगी- हिंदी उपन्यासों में नारी, पृ० 74
2. प्रयागराज मेहता - प्रेमचंद के पात्र, पृ०-200